संजय की कलम से ..

भगाइये क्रोध रूपी भूत को

संसार में जितनी भी प्रकार की अग्नि हैं, वे मानव की अंतरात्मा या मन को नहीं जलातीं किंतु क्रोध एक ऐसी अग्नि है जो मन को भी जलाकर जीवन के सार को नष्ट कर देती है। अत: जब कोई मनुष्य क्रोध करता है तो लोग कहते हैं कि 'वह आग-बबूला हो गया, उसके क्रोध का ज्वालामुखी फट पड़ा।' इस प्रकार स्पष्ट है कि जो मनुष्य जीवित अवस्था में स्वयं को बार-बार क्रोध की चिता पर जलाता है, वह अज्ञानी है। मुर्दे को जब अग्नि पर लिटाया जाता है तो उसे अग्नि का दाह अनुभव नहीं होता परंतु कितने आश्चर्य की बात है कि जीवित मनुष्य क्रोध में स्वयं को दुखी करता है और फिर कहता है कि 'मैंने फलां मनुष्य को सीधा कर दिया, मैंने उसका दिमाग ठिकाने लगा दिया, मैंने उसके होश ही उड़ा दिए, मैंने उसको मज़ा चखा दिया।' स्पष्ट है कि क्रोध द्वारा अपने दिमाग को बे-ठिकाने करने वाला, अपने स्वरूप को उलटाने वाला और अपने मज़े को गँवाने वाला मनुष्य स्वयं ही होश में नहीं होता, उसके अपने ही होश उड़ गए होते हैं, तभी तो हम कई बार देखते हैं कि मनुष्य क्रोधावेश से अपने कपड़े भी फाड़ने लगता है, बाल उखाड़ने लगता है और जबड़े फाड़-फाड़ कर बोलने लगता है। अत: क्रोध एक प्रकार का भूत है क्योंकि भूतों को मानने वाले लोग भी कहा करते हैं कि जब किसी में भूत प्रवेश होता है, तब वह भूत भी कपड़े फाड़ने लगता है, सिर को बुरी तरह पीटने लगता है अथवा अन्यान्य प्रकार से स्वयं भी दुखी होता है और दूसरों को भी दुखी करता है। इसलिए परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं कि अब इस क्रोध रूपी भूत को भगा दो।

क्रोधी मनुष्य कहता है कि लोग मेरी बात मानते ही नहीं, इसलिए मुझे क्रोध करना पड़ता है। उसके कहने का भाव यह हुआ कि क्रोध का ही सिक्का चलता है परंतु अब परमपिता परमात्मा कहते हैं कि यदि दूसरों पर क्रोध रूपी गोली चलाओगे, कड़वे वचन रूपी पत्थर बरसाओगे, दुखदायक शब्द रूपी बम फेंकोगे तो मरते समय तुम्हें ऐसी पीड़ा होगी जैसे किसी का सीना गोलियों से छलनी हो रहा हो, किसी के सिर पर बम मार दिया गया हो अथवा किसी के माथे पर ज़ोर से पत्थर जा लगा हो। अत: यदि अपने जीवन को अभी सुखी बनाना चाहते हो और स्वर्ग का राज्य-भाग्य पाना चाहते हो तो क्रोध का विरोध करके अब प्रेम की गंगा बहाओ। **(शेष..पृष्ठ 9 पर)**

अमृत-सूची

- मन की धुलाई *(सम्पादकीय)*..... 2
- ऐसे मिली जीवन को 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर आपके..... 5
- पुरुषोत्तम संगमयुग एवं..... 7
- स्वर्ग का द्वार है नारी 10
- 'पत्र' संपादक के नाम..... 12
- बाबा प्यार तुम्हारा *(कविता)*.. 12
- सचित्र सेवा समाचार..... 13
- परिस्थिति - वरदान या..... 15
- सचित्र सेवा समाचार..... 17
- डिप्रेशन: जानकारी और..... 21
- 'अपमान'- महान बनने का...24
- चिन्ता से मुक्ति 27
- ज़रूरी है परिवार 28
- संकल्पों से प्रकृति परिवर्तन...29
- अनगिनत खज़ाने *(कविता)*... 31
- पहाड़ जैसा दुख भूल गई.....32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	75 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	75/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383